भारतीय जनजातियों का स्वरूप

जनजातीय समुदाय भारतीय समाज का एक प्रमुख अतिसंवेदनशील वर्ग है, जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करती हैं

वर्तमान भारत में, 705 समुदायों को अनुसूचित जनजातीय के रूप में अनुसूचित किया गया है, जिसमें से 75 को 'विशेष रूप से कमजोर जनजातीय' (PVTG) बोला जाता है

भारतीय जनजातियों में 32.6 प्रतिशत इसाई हैं;
एक करोड जनजातियां शहरों में निवास करती हैं;
जनजातीय समुदाय में साक्षरता दर 49.7 प्रतिशत है;
भारतीय जनजातियों में लिंगानुपात 990 तथा शिशु लिंगानुपात 957 है

भारतीय जनजातियों का भौगोलिक विस्तार

भारतीय जनजातियों की कुल जनसंख्या 10.43 करोड (8.61%) है, जिनमें से अधिकांश जनसंख्या झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, ओड़िशा, राजस्थान एवं उत्तर-पूर्वी राज्यों में निवास करती है

सर्वाधिक राज्यवार जनजातियाँ, क्रमशः लक्ष्यद्वीप (94.8%), मिजोरम (94.4%), नागालैण्ड (86.5%), मेघालय (86.1%) में निवास करती हैं

सबसे कम राज्यवार जनजातियाँ, क्रमशः उत्तर प्रदेश (0.6%), तमिलनाडु (1.1%), बिहार (1.3%), तथा केरल (1.5%) में निवास करती हैं

↓

पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ एवं दिल्ली में, किसी भी समुदाय को जनजाति के रूप में अनुसूचित नहीं किया गया है

निष्कर्ष

↓

समकालीन भारत में- औद्योगिकरण, नगरीकरण एवं स्थानीय गतिशीलता में होने वाली वृद्धि ने, जनजातियो के उपरोक्त भौगालिक विस्तार को मिश्रित कर दिया है।

फलतः य सभी जनजातिया आज भारत के अन्य क्षेत्रों में भी दृष्टिगत होती है

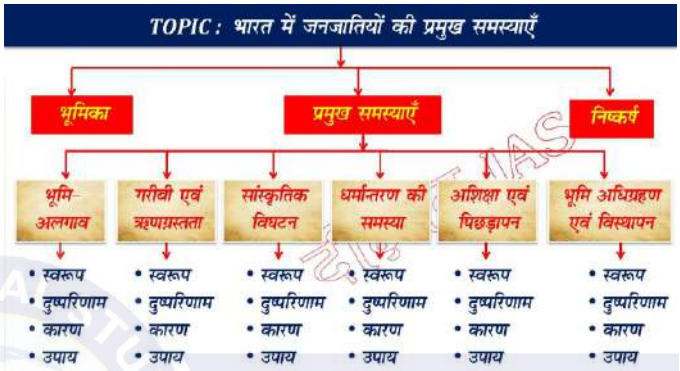

भूमिका

↓

- जनजातीय समुदाय भारतीय समाज का एक प्रमुख अंग है, जिनको पिछड़ा समुदाय के रूप में चिह्नीत किया जाता है
- पिछड़ा समुदाय के रूप में भारत का जनजातीय समाज कई प्रकार की समस्याओं से ग्रसित रहा है; जैसे-

निरक्षरता एवं अशिक्षा की समस्या

↓

भारतीय जनजातियो में निरक्षरता लगभग 41% है, जबकि राष्ट्रीय औसत के अनुसार इसे 27% होना चाहिए,

फलतः.....

- अन्य विभिन्न समस्याओं का उद्भव
- जानकारी नहीं होने से, विकास के लाभों से वंचित

- जागरूकता के अभाव के कारण, साहूकारों एवं महाजनों द्वारा शोषण
- मानव संसाधन के रूप में समुचित विकास नहीं होने से, विकास के अवसरों से वंचित
- रूढ़िवादिता, फलतः इनका विकास दुष्प्रभावित

गरीबी एवं ऋणग्रस्तता की समस्या

↓

फलतः.....

- बंधआ मजदूरी एवं भूमि से अलगाव संभव
- भुखमरी एवं कुपोषण फलतः विभिन्न बिमारियों से ग्रसीत
- जनजातीय महिलाओं में वैश्यावृत्ति एवं यौन संबंधी बिमारिया
- नक्सलीकरण एवं अपराध

भूमि अलगाव एवं विस्थापन की समस्या

फलतः.....

- भूमि नहीं होने पर, कृषि मजदूर बनने पर विवश (1961 में 20% जनजातिया कृषि श्रमिक थे, जो बढ़कर 2011 में 44.8% हो गय
- विकास योजनाओं के कारण इनकी भूमि का अधिग्रहण फलतः इनका विस्थापन एवं समुचित पुनर्वास का अभाव (भारत में कुल विस्थापन का 55% जनजातीय विस्थापन है)
- इनका प्रवास के लिए विवश होना
- इनमें गरीबी एवं ऋणग्रस्तता में वृद्धि
- इनमें तनाव एवं कुंठा का उद्भव

सांस्कृतिक क्षरण एवं विलुप्तता की समस्या

फलतः.....

- पहचान का संकट
- जनजातीय नृजातीयता में वृद्धि, फलतः नृजातीय संघर्ष एवं उग्रवाद का उद्भव
- विलुप्त होती जनजातियों (जैसे- शैम्पेन- 214, जारवा-200, ओंग-97, सेन्टलीज- 80, ग्रेट अंडमानी 26) के कारण भारतीय विविधता को खतरा

धर्मान्तरण की समस्या

फलतः.....

- इनका सांस्कृतिक क्षरण
- इनमें पहचान का संकट
- इनमें साम्प्रदायिकता का उद्भव

जनजातीय समस्याओं के लिए उत्तरदायी कारण

- औपनिवेशिक शासन काल से संबंधित कारण
- स्वातंत्रोत्तर काल से संबंधित कारण

जनजातीय समस्या के समाधान हेतु किए गए प्रयास

जनजातीय समस्या के समाधान हेतु किए गए प्रयासों का मूल्यांकन एवं सुझाव

- नीतिगत प्रयास
- संवैधानिक एवं वैधानिक प्रयास
- योजनागत प्रयास

- नीतिगत प्रयासों का मूल्यांकन एवं सुझाव
- संवैधानिक तथा वैधानिक प्रयासों का मूल्यांकन एवं सुझाव
- योजनागत प्रयासों का मूल्यांकन एवं सुझाव